श्रीमद्भागवत रसिक कुटुंब

॥श्री गणेशाय नमः॥

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्री रामचरितमानस

प्रथम सोपान

(बालकाण्ड)

श्लोक-

वर्णानामर्थसं(ङ्)घानां, रसानां(ञ्) छन्दसामपि।
मङ्गलानां(ञ्) च कर्त्तारौ , वन्दे वाणीविनायकौ॥1॥

भवानीशङ्करौ वन्दे, श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां(व्ँ) विना न पश्यन्ति, सिद्धाः(स्) स्वान्तःस्थमीश्वरम्॥2॥

वन्दे बोधमयं(न्) नित्यं(ङ्), गुरुं शङ्कररूपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि, चन्द्रः(स्) सर्वत्र वन्द्यते॥3॥

सीतारामगुणग्राम- पुण्यारण्यविहारिणौ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ, कवीश्वरकपीश्वरौ॥4॥

उद्भवस्थितिसं(म्)हार- कारिणीं(ङ्) क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां(न्), नतोऽहं रामवल्लभाम्॥5॥

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा,
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।

यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां(वँ),
वन्देऽहं(न्) तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्॥6॥

नानापुराणनिगमागमसम्मतं(यँ) यद्,
रामायणे निगदितं(ङ्) क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा-
भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति॥7॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

द्वितीय सोपान

अयोध्याकाण्ड

श्लोक

यस्याङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके,
भाले बालविधुर्गले च गरलं(यँ) यस्योरसि व्यालराट्।
सोऽयं भूतिविभूषणः(स्) सुरवरः(स्) सर्वाधिपः(स्) सर्वदा
शर्वः(स्) सर्वगतः(श्) शिवः(श्) शशिनिभः(श्) श्रीशङ्करः(फ्) पातु माम्।।1।।

प्रसन्नतां(यँ) या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवासदुःखतः।
मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे सदास्तु सा मञ्जुलमंगलप्रदा।।2।।

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापं(न्) नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।3।।

।।श्रीगणेशाय नमः।।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

तृतीय सोपान

अरण्यकाण्ड

श्लोक

मूलं(न्) धर्मतरोर्विवेकजलधेः(फ्) पूर्णेन्दुमानन्ददं(वँ),
वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यघघनध्वान्तापहं(न्) तापहम्।
मोहाम्भोधरपूगपाटनविधौ स्वःसम्भवं शंकरं(वँ),
वंदे ब्रह्मकुलं(ङ्) कलंकशमनं श्री रामभूपप्रियम्॥1॥

सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुंदरं,
पाणौ बाणशरासनं(ङ्) कटिलसत्तूणीरभारं(वँ) वरम्।
राजीवायतलोचनं(न्) धृतजटाजूटेन संशोभितं,
सीतालक्ष्मणसं(यँ)युतं पथिगतं रामाभिरामं भजे॥2॥

छं0-नमामि भक्तवत्सलं। कृपालुशीलकोमलं।।
भजामि ते पदांबुजं। अकामिनां स्वधामदं।।
निकामश्यामसुंदरं। भवाम्बुनाथमंदरं।।
प्रफुल्लकंजलोचनं। मदादिदोषमोचनं।।
प्रलंबबाहुविक्रमं। प्रभोऽप्रमेयवैभवं।।
निषंगचापसायकं। धरं(न्) त्रिलोकनायकं।।
दिनेशवंशमंडनं। महेशचापखंडनं।।
मुनींद्रसंतरंजनं। सुरारिवृंदभंजनं।।
मनोजवैरिवंदितं। अजादिदेवसेवितं।।

विशुद्धबोधविग्रहं। समस्तदूषणापहं।।
नमामि इंदिरापतिं। सुखाकरं सतां(ङ्) गतिं।।
भजे सशक्तिसानुजं। शचीपतिप्रियानुजं।।
त्वदंघ्रिमूल ये नराः। भजंति हीनमत्सराः।।
पतंति नो भवार्णवे। वितर्कवीचिसंकुले।।
विविक्तवासिनः(स्) सदा। भजंति मुक्तये मुदा।।
निरस्य इंद्रियादिकं। प्रयांति ते गतिं स्वकं।।
तमेकमद्भुतं प्रभुं। निरीहमीश्वरं(वँ) विभुं।।
जगद्गुरुं(ञ्) च शाश्वतं। तुरीयमेव केवलं।।
भजामि भाववल्लभं। कुयोगिनां सुदुर्लभं।।
स्वभक्तकल्पपादपं। समं सुसेव्यमन्वहं।।
अनूपरूपभूपतिं। नतोऽहमुर्विजापतिं।।
प्रसीद मे नमामि ते। पदाब्जभक्ति देहि मे।।
पठंति ये स्तवं इदं। नरादरेण ते पदं।।
व्रजंति नात्र संशयं। त्वदीयभक्ति संयुताः।।

दो0-बिनती करि मुनि नाइ सिरु ,कह कर जोरि बहोरि।
चरन सरोरुह नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि।।4।।

।।श्री गणेशाय नमः।।

श्री जानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

चतुर्थ सोपान

किष्किन्धाकाण्ड

श्लोक कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ,
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ।
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥1॥

ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं(ङ्) कलिमलप्रध्वंसनं(ञ्) चाव्ययं,
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा।
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं(न्)
धन्यास्ते कृतिनः(फ्) पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम्॥2॥

।।श्रीगणेशाय नमः।।

श्री जानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

पञ्चम सोपान

सुन्दरकाण्ड

श्लोक

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं(न्) निर्वाणशान्तिप्रदं,
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं(वँ) वेदान्तवेद्यं(वँ) विभुम् ।
रामाख्यं(ञ्) जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं(वँ),
वन्देऽहं(ङ्) करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम्।।1।।

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये,
सत्यं(वँ) वदामि च भवानखिलान्तरात्मा।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे,
कामादिदोषरहितं(ङ्) कुरु मानसं(ञ्) च।।2।।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं(न्),
दनुजवनकृशानुं(ञ्) ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं(वँ्) वानराणामधीशं,
रघुपतिप्रियभक्तं(वँ्) वातजातं(न्) नमामि।।3।।

।।श्रीगणेशाय नमः।।

श्री जानकीवल्लभो विजयते

श्री रामचरितमानस

षष्ठ सोपान

लंकाकाण्ड

श्लोक

रामं(ङ्) कामारिसेव्यं भवभयहरणं(ङ्) कालमत्तेभसिं(म्)हं(यँ्),
योगीन्द्रं(ञ्) ज्ञानगम्यं(ङ्) गुणनिधिमजितं(न्) निर्गुणं(न्) निर्विकारम्।

मायातीतं सुरेशं(ङ्) खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं(वँ्)
वन्दे कन्दावदातं सरसिजनयनं(न्) देवमुर्वीशरूपम्।।1।।

शं(ङ्)खेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं(ङ्),
कालव्यालकरालभूषणधरं(ङ्) गंगाशशांकप्रियम्।
काशीशं(ङ्) कलिकल्मषौघशमनं(ङ्) कल्याणकल्पद्रुमं(न्),
नौमीड्यं(ङ्) गिरिजापतिं(ङ्) गुणनिधिं(ङ्) कन्दर्पहं शङ्करम्।।2।।

यो ददाति सतां शम्भुः(ख्), कैवल्यमपि दुर्लभम्।
खलानां(न्) दण्डकृद्योऽसौ, शङ्करः(श्) शं(न्) तनोतु मे।।3।।

।।श्रीगणेशाय नमः।।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

सप्तम सोपान

(उत्तरकाण्ड)

श्लोक

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं,
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम्।
पाणौ नाराचचापं(ङ्) कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं(न्),
नौमीड्यं(ञ्) जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम्।।1।।

कोसलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कोमलावजमहेशवन्दितौ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ।।2।।

कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम्।
कारुणीककलकञ्जलोचनं(न्) नौमि शंकरमनंगमोचनम्।।3।।

रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं।
विभुं(वँ) व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।।
निजं(न्) निर्गुणं(न्) निर्विकल्पं(न्) निरीहं।
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ।।1।।

निराकारमोंकारमूलं(न्) तुरीयं।
गिराज्ञानगोतीतमीशं(ङ्) गिरीशम् ।।
करालं महाकालकालं(ङ्) कृपालं।
गुणागारसंसारपारं(न्) नतोऽहम् ॥ 2॥

तुषाराद्रिसंकाशगौरं(ङ्) गभीरं।
मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरम् ।।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगङ्गा।
लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥ 3॥

चलत्कुण्डलं भ्रूसुनेत्रं(वँ) विशालं।
प्रसन्नाननं(न्) नीलकण्ठं(न्) दयालम् ।।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥ 4॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं।
अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ।।
त्रयः(श्) शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं।
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥ 5॥

कलातीतकल्याणकल्पान्तकारी।
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।।
चिदानन्दसंदोहमोहापहारी।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥ 6॥

न यावद् उमानाथपादारविन्दं।
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।।
न तावत्सुखं शान्तिसन्तापनाशं।
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ॥ 7॥

न जानामि योगं(ञ्) जपं(न्) नैव पूजां।
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं।
प्रभो पाहि आपन्नमामीशशम्भो ॥ 8॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं(वँ), विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या, तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

सुनि बिनती सर्बग्य सिव देखि बिप्र अनुरागु।
पुनि मंदिर नभबानी भइ द्विजबर बर मागु॥108 क॥

जौं प्रसन्न प्रभो मो पर नाथ दीन पर नेहु।
निज पद भगति देइ प्रभु पुनि दूसर बर देहु॥108 ख॥

तव माया बस जीव जड़ संतत फिरइ भुलान।
तेहि पर क्रोध न करिअ प्रभु कृपासिंधु भगवान॥108 ग॥

संकर दीनदयाल अब एहि पर होहु कृपाल।
साप अनुग्रह होइ जेहिं नाथ थोरेहीं काल॥108 घ॥

श्लोक-यत्पूर्व प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यै तु रामायणम्।
मत्वा तद्रघुनाथमनिरतं स्वान्तस्तमःशान्तये
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम्।।1।।

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम्।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये
ते संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः।।2।।

मासपारायण, तीसवाँ विश्राम

नवाह्नपारायण, नवाँ विश्राम

———

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
सप्तमः सोपानः समाप्तः।

(उत्तरकाण्ड समाप्त)

मत्वा तद्रघुनाथमनिरतं स्वान्तस्तमःशान्तये
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम्।।1।।

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम्।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये
ते संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः।।2।।

मासपारायण, तीसवाँ विश्राम

नवाह्नपारायण, नवाँ विश्राम

———

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
सप्तमः सोपानः समाप्तः।

(उत्तरकाण्ड समाप्त)